



ResearchNext International Multidisciplinary Journal

Vol- 2, Issue- 3, July-September 2026

Email id: editor@researchnextjournal.com

ISSN (O)- 3107-9725

Website- www.researchnextjournal.com

आधुनिक बिहार में सामाजिक चेतना और कुरीति—उन्मूलन: आर्य समाज के सुधारवादी प्रयासों का ऐतिहासिक मूल्यांकन

रेखा कुमारी

शोधार्थी, इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया

प्रोफेसर राजेश कुमार सिंह

शोध पर्यवेक्षक, इतिहास विभाग अनुग्रह मेमोरियल कालेज, गया

Article Info: (Received- 23/04/2026, Accept- 26/06/2026, Published- 05/07/2026)

DOI- [10.64127/rnimj.2026v2i30012](https://doi.org/10.64127/rnimj.2026v2i30012)

शोध—सार

उन्नीसवें सदी के उत्तरार्ध और बीसवें सदी के आरम्भ में औपनिवेशिक बिहार गंभीर सामाजिक जड़ता, ढ़ादिता और कुरीतियों से ग्रस्त था। जातिगत भेदभाव, अस्पश्यता, बाल—विवाह, पर्दा—प्रथा तथा विधवाओं की दयनीय स्थिति ने समाज के विकास को अवरुद्ध कर रखा था। ऐसी परिस्थिति में स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा संस्थापित आर्य समाज ने बिहार में सामाजिक पुनर्जागरण की नींव रखी। प्रस्तुत शोध—आलेख आधुनिक बिहार में सामाजिक चेतना के प्रसार और कुरीति—उन्मूलन में आर्य समाज के सुधारवादी प्रयासों का ऐतिहासिक मूल्यांकन करता है। अध्ययन स्पष्ट करता है कि पटना, दानापुर, मुंगेर, आरा, भागलपुर और मुजफ्फरपुर जैसे केंद्रों से संचालित आर्य समाज की शाखाओं ने वैदिक आदर्शों की पुनरस्थापना के साथ—साथ व्यावहारिक सामाजिक सुधार किए। संस्था ने जन्म—आधारित वर्ण—व्यवस्था के स्थान पर गुण—कर्म—स्वभाव पर आधारित सामाजिक समता का सिद्धांत स्थापित किया। अछूतोंद्वारा और दलित जातियों के सामाजिक अधिकारों के लिए संगठित प्रयास किए गए। स्त्री—शिक्षा को गति देने के लिए कन्या पाठशालाओं की स्थापना हुई। विधवा पुनर्विवाह का समर्थन कर विधवाश्रमों का निर्माण किया गया। मृत्यु—भोज और दहेज जैसी प्रथाओं पर अंकुश लगाने के लिए व्यापक प्रचार अभियान चलाए गए। प्रस्तुत शोध यह निष्कर्ष निकालता है कि आर्य समाज के इन प्रयासों ने बिहार के पारंपरिक सामाजिक ढांचे में वैज्ञानिक दृष्टि, आत्मसम्मान और आधुनिक चेतना का संचार किया, जिसने कालान्तर में स्वतंत्रता आंदोलन की सामाजिक जमीन भी तैयार की।

मुख्य शब्द: आर्य समाज, आधुनिक बिहार, सामाजिक चेतना, कुरीति—उन्मूलन, अछूतोंद्वारा, स्त्री—शिक्षा, वैदिक पुनर्जागरण, स्वामी दयानंद सरस्वती।

प्रस्तावना

उन्नीसवें शताब्दी का उत्तरार्ध भारतीय इतिहास में सामाजिक—धार्मिक सुधार आंदोलनों का एक महत्वपूर्ण संक्रान्ति काल था। बिहार, जो प्राचीन काल में ज्ञान, दर्शन और आध्यात्मिक चेतना का केंद्र रहा था, ब्रिटिश औपनिवेशिक काल तक आते—आते सामंती बंधनों और सामाजिक कुरीतियों के गहरे संकट में पफंस चुका था। समाज में ढ़ादिता, पोंगापंथ, जातिगत संकीर्णता और अंधविश्वास का बोलबाला था। सामाजिक स्तरीकरण इतना कठोर था कि निम्न जातियों को मूलभूत मानवीय अधिकारों से वंचित रखा गया था। स्त्रियों की स्थिति अत्यंत शोचनीय थी। बाल—विवाह, अनूमेले विवाह, पर्दा—प्रथा और सती प्रथा के अवशेषों के साथ विधवाओं का जीवन

नरक समान बना हुआ था। शिक्षा पर कुछ विशिष्ट वर्गों का एकाधिकार था, जिससे जनसामान्य अज्ञान के अंधकार में डूबा हुआ था। इस जटिल सामाजिक परिवेश में स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा 1875 में स्थापित आर्य समाज एक सशक्त वैचारिक और व्यावहारिक सुधारवादी शक्ति के रूप में उभरा। स्वामी दयानंद का मूल मंत्र 'वेदों की ओर लौटो' केवल धार्मिक आह्वान नहीं था, बल्कि यह समाज के संपूर्ण कायाकल्प का क्रांतिकारी घोषणापत्र था। बिहार में आर्य समाज का प्रवेश सामाजिक ढों पर सीधा प्रहार था। आर्य समाज ने ईश्वर की एकता, जन्मना जाति-भेद के निषेध और स्त्री-पुरुष की समता पर बल दिया। बिहार के शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में आर्य समाज की शाखाओं ने समाज सुधार के एजेंडे को जन-आंदोलन का रूप दिया। इसने पुरोहितवादी व्यवस्था के शोषणकारी स्वरूप को चुनौती दी और समाज के उपेक्षित वर्गों को आत्मसम्मान के साथ जीने की प्रेरणा दी। फलस्वरूप, बिहार में एक नई बौद्धिक और नैतिक चेतना का प्रस्फुटन हुआ जिसने आधुनिक बिहार के निर्माण की दिशा तय की।

साहित्य समीक्षा

प्रस्तुत शोध-विषय से संबंधित अनेक प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन उपलब्ध है। स्वामी दयानंद सरस्वती कृत सत्यार्थ प्रकाश (1875) समाज सुधार, वर्ण-व्यवस्था के पुनर्निर्धारण और कुरीति-उन्मूलन के आधारभूत सैद्धांतिक नियम प्रस्तुत करता है। के.के. दत्त की कृति हिस्ट्री ऑफ पफ्रीडम मूवमेंट इन बिहार (1957) औपनिवेशिक बिहार में राजनैतिक जागृति के साथ-साथ आर्य समाज के सामाजिक योगदान को रेखांकित करती है। जॉर्डेस की पुस्तक दयानंद सरस्वती: हिज लाइफ एंड आइडियाज (1978) में स्वामी जी के सुधारवादी दर्शन और प्रांतीय शाखाओं के प्रभाव का विश्लेषण मिलता है।

सुमित्रा वशिष्ठ का अध्ययन आर्य समाज इन बिहार (1985) क्षेत्रीय स्तर पर आर्य समाज की स्थापना, इसके विभिन्न प्रचारकों के कार्यों और सामाजिक सुधारों का विस्तृत विवरण देता है। इसके अतिरिक्त, समकालीन पत्रिकाओं जैसे आर्य मित्र तथा औपनिवेशिक बिहार के विभिन्न जिला गजेटियर्स में आर्य समाज के अछूतोद्धार, कन्या पाठशालाओं और शुद्धि सभाओं से जुड़े आंदोलनों का प्रमाणिक ब्योरा मिलता है। पूर्ववर्ती अध्ययनों में अधिकांशतः आर्य समाज के धार्मिक अथवा राजनैतिक पहलुओं पर बल दिया गया है, जबकि बिहार के विशिष्ट क्षेत्रीय संदर्भ में कुरीति-उन्मूलन और सामाजिक समरसता के व्यावहारिक आयामों का एकीकृत ऐतिहासिक विश्लेषण अपेक्षित है।

शोध का उद्देश्य

- आधुनिक बिहार में आर्य समाज के प्रसार और इसके संस्थागत विकास का ऐतिहासिक विश्लेषण करना।
- जाति-प्रथा, अस्पृश्यता और सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध आर्य समाज के सुधारवादी अभियानों का मूल्यांकन करना।
- स्त्री-शिक्षा, बाल-विवाह निषेध और विधवा पुनर्विवाह के क्षेत्र में किए गए कार्यों की पड़ताल करना।
- बिहार के जनमानस में व्याप्त अन्य सामाजिक कुरीतियों (दहेज, मृत्यु-भोज) के उन्मूलन में आर्य समाज की भूमिका का परीक्षण करना।

शोध कार्यप्रणाली

प्रस्तुत शोध-आलेख ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति, भूजगतपबंस दक, दसलजपबंस डमजीवकद्ध पर आधारित है। शोध में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का संतुलित उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के रूप में स्वामी दयानंद के मूल ग्रंथ, आर्य समाज के नियम, प्रांतीय वार्षिक रिपोर्ट, औपनिवेशिक प्रशासनिक दस्तावेज और गजेटियर्स का अध्ययन किया गया है। द्वितीयक स्रोतों के रूप में शोध प्रबंध, पुस्तकें और शोध पत्रिकाएं शामिल हैं। तथ्यों का वस्तुनिष्ठ और तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

विवेचना

बिहार में आर्य समाज का आगमन एवं संगठनात्मक विस्तार

बिहार में आर्य समाज के विचारों का प्रसार उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशकों में प्रारंभ हुआ। स्वयं स्वामी दयानंद सरस्वती ने बिहार की कई यात्राएं कीं, जिनमें पटना, दानापुर, डुमरांव, आरा, छपरा और भागलपुर प्रमुख थे। इन यात्राओं के दौरान स्वामी जी ने स्थानीय विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ किए और जनसाधारण को वैदिक धर्म के वास्तविक स्वरूप से परिचित कराया। बिहार में पहली आधिकारिक शाखा 1878 के आसपास दानापुर में

स्थापित हुई, जिसके बाद पटना, मुंगेर, गया, मुजफ्फरपुर और भागलपुर में शाखाओं का तेजी से जाल बिछ गया। इन शाखाओं ने समाज सुधार को केवल बौद्धिक विबमर्श तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे एक संगठित संस्थागत आंदोलन बना दिया। स्वामी सहजानंद, पंडित भवानी लाल भारतीय, पंडित मन्नूलाल और स्वामी श्रद्धानंद जैसे प्रचारकों ने बिहार के सुदूर देहातों तक वैदिक सिद्धांतों और सुधारवादी विचारों को पहुंचाया। नगरों से निकलकर यह आंदोलन कस्बों और गांवों तक पहुंचा, जहां इसने सीधे ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित किया।

जाति-प्रथा का विरोध और वर्ण-व्यवस्था की नवीन व्याख्या

बिहार का पारंपरिक समाज जन्म-आधारित कठोर जाति-व्यवस्था में जकड़ा हुआ था। उच्च जातियों का सामाजिक और धार्मिक मामलों पर पूर्ण नियंत्रण था, जबकि बहुसंख्यक निचली जातियां अमानवीय सामाजिक अपमान सहने को विवश थीं। आर्य समाज ने इस व्यवस्था की जड़ पर प्रहार किया। स्वामी दयानंद ने वेदों के आधार पर यह सिद्ध किया कि वर्ण-व्यवस्था जन्म से नहीं, बल्कि गुण, कर्म और स्वभाव से निर्धारित होती है:

जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते।

आर्य समाज ने घोषणा की कि कोई भी व्यक्ति जन्म से अछूत या उच्च नहीं होता। बिहार के संदर्भ में यह एक क्रांतिकारी विचार था। आर्य समाजियों ने सामाजिक समरसता के लिए सार्वजनिक स्थलों पर सहिभोज (पंगति-प्रथा) का आयोजन किया, जिसमें सभी जातियों के लोग एक साथ बैठकर भोजन करते थे। इसने बिहार के ढवादी हिंदू समाज में वर्षों से चली आ रही 'छुआछूत' और खान-पान संबंधी संकीर्णताओं को सीधे चुनौती दी। कई क्षेत्रों में ढवादी तत्त्वों ने आर्य समाज का कड़ा विरोध किया, बहिष्कार की धमकियां दीं, किंतु आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने अपने समतावादी अभियान को जारी रखा।

अछूतोद्धार और शुद्धि आंदोलन का सामाजिक प्रभाव

आर्य समाज का सबसे उल्लेखनीय योगदान बिहार में दलितों और शोषितों को गरिमा प्रदान करना था। तत्कालीन बिहार में दलितों को मंदिरों में प्रवेश की अनुमति नहीं थी, न ही उन्हें वेद मंत्र सुनने या जनेऊ (यज्ञोपवीत) धारण करने का अधिकार था। आर्य समाज ने 'यज्ञोपवीत आंदोलन' चलाया। डाम, चमार, दुसाध और अन्य वंचित जातियों के हजारों लोगों को गायत्री मंत्र की दीक्षा दी गई और सार्वजनिक रूप से यज्ञोपवीत पहनाया गया।

यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं था, बल्कि सामाजिक बराबरी का एक शक्तिशाली प्रतीक था। जब एक दलित युवक वेद मंत्रों का पाठ करता था और वंफधे पर जनेऊ धारण करता था, तो वह सदियों पुराने सामाजिक हीनता के बोध से मुक्त हो जाता था। इसके साथ ही, शुद्धि आंदोलन के माध्यम से उन लोगों को पुनः हिंदू समाज में सम्मानजनक स्थान दिया गया, जिन्होंने दबाव, प्रलोभन या सामाजिक तिरस्कार के कारण अन्य धर्म अपना लिया था। शुद्धि सभाओं ने उन वर्गों के भीतर यह विश्वास जगाया कि वे समाज के अभिन्न और सम्मानित अंग हैं। पटना और मुंगेर के अंचलों में दलित बच्चों के लिए अलग से पाठशालाएं और छात्रावास खोले गए, जिससे उनके बौद्धिक विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ।

नारी-उत्थान: स्त्री-शिक्षा, पर्दा-प्रथा और बाल-विवाह का उन्मूलन

औपनिवेशिक बिहार में स्त्रियों की दशा अत्यंत शोचनीय थी। कन्याओं को बोझ समझा जाता था और उनका बचपन समाप्त होने से पहले ही विवाह कर दिया जाता था। घूंघट और पर्दा-प्रथा के कारण स्त्रियां घर की चहारदीपवारी में कैद थीं। आर्य समाज ने यह दृढ़ मान्यता स्थापित की कि जब तक आधी आबादी अज्ञान और पराधीनता में रहेगी, तब तक समाज का वास्तविक विकास संभव नहीं है।

स्त्री-शिक्षा के प्रसार के लिए आर्य समाज ने बिहार के प्रमुख नगरों में 'आर्य कन्या विद्यालय' और 'कन्या पाठशालाओं' की स्थापना की। पटना, आरा, मुजफ्फरपुर और भागलपुर में स्थापित कन्या विद्यालयों ने बालिकाओं के लिए आधुनिक और नैतिक शिक्षा के द्वार खोले। इन विद्यालयों में बालिकाओं को हिंदी, संस्कृत, गणित, सिलाई-कढ़ाई के साथ-साथ शारीरिक व्यायाम और आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिया जाने लगा।

बाल-विवाह की रोकथाम के लिए आर्य समाज ने कानून और जनमत दोनों स्तरों पर संघर्ष किया। समाज सुधारकों ने घूम-घूमकर लोगों को समझाया कि अल्पायु में विवाह से संतानों का स्वास्थ्य क्षीण होता है और कन्याओं का जीवन खतरे में पड़ता है। शारदा एक्ट (1929) के पारित होने से बहुत पहले ही आर्य समाज विवाह

के लिए न्यूनतम आयु (कन्या के लिए 16 और वर के लिए 25 वर्ष) का प्रचार कर रहा था। पर्दा-प्रथा के विरुद्ध 1 महिलाओं को सार्वजनिक वैदिक यज्ञों में बैठने और आहूति देने का अधिकार दिया गया। इससे महिलाओं में अभूतपूर्व आत्मविश्वास का संचार हुआ।

विधवा पुनर्विवाह और निराश्रितों की सुरक्षा

उच्च जातियों में विधवाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। पति की मृत्यु के बाद स्त्री को समस्त सांसारिक सुखों से वंचित कर एक जीवित मत्प्राय का जीवन जीने पर विवश किया जाता था। आर्य समाज ने विधवा पुनर्विवाह का पुरजोर समर्थन किया। ढवादी हिंदू समाज के भारी विरोध और सामाजिक बहिष्कार के बावजूद बिहार में आर्य समाज के विवाह मंडपों में अनेक विधवा विवाह संपन्न कराए गए। इसके साथ ही, समाज से बहिष्कृत और निराश्रित स्त्रियों के लिए आर्य समाज ने 'अनाथालय' और 'विधवाश्रमों' की स्थापना की। इन आश्रमों में स्त्रियों को केवल शरण ही नहीं दी जाती थी, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए व्यावसायिक और तकनीकी प्रशिक्षण भी दिया जाता था। इससे निराश्रित महिलाओं का सामाजिक शोषण रुका और उन्हें सम्मानजनक जीवन जीने का आधार मिला।

अन्य कुरीतियों पर प्रहार: दहेज, मृत्यु-भोज और नशाखोरी

आर्य समाज ने दैनिक जीवन में प्रचलित उन सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध भी बिगुल पफूँका जो सामान्य परिवारों को आर्थिक रूप से तबाह कर रही थीं। इनमें 'तिलक' और 'दहेज' प्रथा अत्यंत प्रमुख थी। बिहार में दहेज की मांग के कारण कई परिवार कर्ज के जाल में पफंस जाते थे। आर्य समाज ने वैदिक रीति से 'आदर्श विवाह' (वैदिक विवाह) की परंपरा शुरू की। इन विवाहों में आडंबर, पेफजूलखर्ची, दहेज और बाजे-गाजे पर पूर्ण प्रतिबंध होता था। केवल यज्ञ और न्यूनतम खर्च में विवाह संपन्न कराए जाते थे।

इसी प्रकार, मृत्यु के पश्चात् भारी-भरक का 'मृत्यु-भोज' (श्राद्ध भोज) की सामंती कुरीति पर प्रहार किया गया। गरीब लोग भी समाज के डर से कर्ज लेकर भोज कराने को विवश होते थे। आर्य समाज के प्रचारकों ने मृत्यु-भोज का बहिष्कार करने के लिए जन-जागरण अभियान चलाए और इसे धर्म-विरुद्ध तथा अमानवीय बताया। इसके अतिरिक्त, बिहार के श्रमिक और ग्रामीण वर्गों में पफैली शराब और गांजे जैसी नशाखोरी के खिलाफ भी आर्य समाज ने नशा-उन्मूलन अभियान चलाए, जिससे अनगिनत परिवारों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार आया।

बिहार के सामाजिक उद्विकास पर प्रभाव

आर्य समाज के इन बहुआयामी प्रयासों ने बिहार के सामाजिक ताने-बाने को गहराई से प्रभावित किया। इसने एक ऐसे नव-मध्यम वर्ग को जन्म दिया जो आधुनिक विचारों से युक्त था किंतु अपनी सांस्कृतिक जड़ों से भी जुड़ा था। इस आंदोलन ने व्यक्ति को अपनी जातिगत पहचान से ऊपर उठकर एक व्यापक 'आर्य' (श्रेष्ठि मनुष्य) के रूप में सोचने की दृष्टि दी। जब बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन ने जोर पकड़ा, तो आर्य समाज द्वारा तैयार की गई यह सामाजिक चेतना उसकी रीढ़ बनी। स्वामी सहजानंद सरस्वती जैसे किसान नेताओं और अनेक स्वतंत्रता सेनानियों के विचारों पर आर्य समाज के सुधारवादी दर्शन की गहरती छाप देखी जा सकती है।

निष्कर्ष

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक बिहार के सामाजिक उद्विकास में आर्य समाज की भूमिका युगांतरकारी रही। जब बिहार सामंती जकड़न, कठोर जाति-भेद और अमानवीय सामाजिक ढों से कराराहा रहा था, तब आर्य समाज ने एक सशक्त प्रकाश-स्तंभ के रूप में कार्य किया। जन्मना वर्ण-व्यवस्था के स्थान पर कर्मणा सिद्धांत, अछूतोद्धार, यज्ञोपवीत आंदोलन, स्त्री-शिक्षा, बाल-विवाह निषेध और विधवा पुनर्विवाह जैसे साहसी कदमों ने समाज की ढवादी नींव को हिलाकर रख दिया। आर्य समाज ने धर्म को केवल अनुष्ठानों से निकालकर सामाजिक न्याय और मानवीय सेवा का माध्यम बनाया। इन सुधारवादी प्रयासों ने बिहार के शोषित और उपेक्षित वर्गों में आत्मसम्मान, समता और बौद्धिक चेतना का ऐसा बीजारोपण किया, जिसने बिहार को अंधकारमय मध्ययुगीन मानसिकता से निकालकर आधुनिकता के मार्ग पर अग्रसर किया।

Author's Declaration

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors,

omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. उपाध्याय, बलदेव। भारतीय दर्शन। शारदा मंदिर, 1999, पृ. सं.11।
2. कुमार, अवधेश। मुंगेर की सांस्कृतिक धरोहर और योग परंपरा। जनभारती प्रकाशन, 2015, पृ. सं.49।
3. गुप्त, किशोर। आधुनिक भारत में समाज सुधार आंदोलन। विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2010, पृ. सं.337।
4. जॉर्डेस, जे.टी.एफ.। दयानंद सरस्वती: हिज लाइफ एंड आइडियाज। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1978, पृ. सं. 107।
5. दत्त, काली किंकर। हिस्ट्री ऑफ द पफ़ीडम मूवमेंट इन बिहार। 3 खंड, गवर्नमेंट ऑफ बिहार, 1957, पृ. सं.91।
6. दयाकृष्ण। भारतीय दर्शन: एक पुनर्दृष्टि। राजकमल प्रकाशन, 2002, पृ. सं.206।
7. पाठक, दीनानाथ। बिहार में सामाजिक और धार्मिक आंदोलन। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, 2011, पृ. सं.65।
8. बरन्वाल, रमेश। मुंगेर का ऐतिहासिक एवं धार्मिक सर्वेक्षण। अनुप म साहित्य, 2012, पृ. सं.97।
9. भारतीय, भवानी लाल। आर्य समाज का इतिहास। 2 खंड, आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, 1991, पृ. सं.87।
10. राय, रोमुमार। आधुनिक बिहार का सामाजिक इतिहास। चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, 1985, पृ. सं.301।

Cite this Article

"रेखा कुमारी: प्रोफेसर राजेश कुमार सिंह", "आधुनिक बिहार में सामाजिक चेतना और कुरीति-उन्मूलन: आर्य समाज के सुधारवादी प्रयासों का ऐतिहासिक मूल्यांकन", ResearchNext International Multidisciplinary Journal (RPIMJ), ISSN: 3107-9725 (Online), Volume:2, Issue:3, July-September 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."